International Journal of Multidisciplinary Education and Research
www.educationjournal.in
ISSN: 2455-4588
Received: 05-07-2021, Accepted: 20-07-2021, Published: 03-08-2021
Volume 6, Issue 3, 2021, Page No. 28-33

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मूल्य आधारित शिक्षा की आवश्यकता: एक अवलोकन

वंदना राणा
सहायक आचार्या, हिंदी विभाग, राजकीय महाविद्यालय ढलियारा, कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश, भारत

सारांश

मूल्य आधारित शिक्षा किसी भी समाज एवं राष्ट्र के विकास का मुख्य आधार होती है। समाज के लिए शिक्षा उसका प्राण तत्व होती है। जिस प्रकार शिक्षा समाज एवं राष्ट्र के लिए अनिवार्य है, उसी प्रकार मूल्यों का भी मानव जीवन में विशेष योगदान रहता है। शिक्षा मानव और समाज के लिए उसी प्रकार उपयोगी है जिस प्रकार जीवन यापन संसाधनों की उसे आवश्यकता होती है।शिक्षा एक ऐसा प्रभावशाली माध्यम है, जो एक राष्ट्र के उद्देश्य एवं मूल्यों को आईने की भांति दर्शाता है।अध्यापक एवं छात्र शिक्षा व्यवस्था के ऐसे दो प्रमुख घटक होते हैं, जो समाज में उपयोगी परिवर्तन ला सकते हैं। मूल्य वास्तव में मानव अस्तित्व एवं व्यक्तित्व के मूल आधार होते हैं। मूल्य मानव जीवन की वह आधारशिला है, जिसके द्वारा समाज में उसका अस्तित्व होता है।यह एक ऐसी प्रेरणा है जो व्यक्ति के प्रयासों को संतुष्ट करती है। मूल्यों को यदि जीवन कहा जाए, तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। मानव जीवन में मूल्यों का समावेश होने से जीवन शांतिपूर्ण स्थायित्व से परिपूर्ण हो जाता है। वही मूल्य उत्तम होते हैं,जो सत्यम, शिवम, सुंदरम की भावना से ओतप्रोत हो। हमारे जीवन को उपयोगी एवं सुखदायी बनाने में मूल्यों का विशेष योगदान रहता है। प्रत्येक मनुष्य के अपने मूल्य होते हैं, उन्हीं के अनुसार वह अपने जीवन क्षेत्र में कार्य करता है। अतः प्रस्तुत शोध में मूल्य का अर्थ, अवधारणा, सिद्धांत एवं मूल्य आधारित शिक्षा की आवश्यकता पर विस्तार से चर्चा की गई है ।

मूल शब्द: शिक्षा, मूल्य,समाज, आधारशिला आदि

प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी समाज में सदैव चलने वाली उद्देश्यपूर्ण एक सामाजिक प्रक्रिया है,जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है।शिक्षा एवं मूल्यों का घनिष्ठ संबंध है। मूल्यों का वास्तविक संबंध जीवन के दृष्टिकोण से होता है।मूल्य सहित जीवन ही अर्थ पूर्ण माना जाता है।समाज में प्रचलित मूल्य शिक्षा को आधार प्रदान करते हैं।शिक्षा एक ऐसा प्रभावशाली माध्यम है, जो एक राष्ट्र के उद्देश्य, आदर्श एवं मूल्यों को एक आईने की भांति दर्शाता है। मूल्य आधारित शिक्षा किसी भी समाज एवं राष्ट्र के चहुंमुखी विकास का मुख्य आधार होती है। मानव एक सामाजिक प्राणी है वह मूल्यों के प्रति सचेत रहता है। मूल्य समाज में विभिन्न आदर्शों, प्रतिमानों के रूप में समाज को एक उचित दिशा-निर्देशन प्रदान करते हैं। समाज में व्याप्त मूल्य एवं आदर्श सामाजिक व्यक्तित्व विकास एवं चरित्र निर्माण की दृष्टि से

वांछनीय एवं उपयोगी होते हैं। मूल्यों को यदि जीवन कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। मूल्य व्यक्ति के आचरण, व्यवहार को निर्देशित करते हैं। समस्त समाज एवं राष्ट्र के अंतिम मूल्य सत्यम, शिवम, सुंदरम होते हैं। एक अध्यापक वह छात्र शिक्षा व्यवस्था के दो मुख्य घटक होते हैं, जो समाज में परिवर्तन ला सकते हैं। व्यक्ति, समाज, राष्ट्र, धर्म सभी अपने मूल्यों का अनुरक्षण करते हैं,और उनमें संशोधन एवं परिवर्तन करते रहते हैं। हमारा जीवन मूल्य भावना से नियंत्रित, व्यवस्थित, निर्दिष्ट, परिचालित एवं प्रेरित होता है।

मूल्य का अर्थ

मूल्य के लिए अंग्रेजी में 'value' शब्द का प्रयोग किया जाता है। 'value'शब्द की निष्पत्ति लैटिन भाषा के 'velere' से हुई है, जिसका तात्पर्य: महत्व, उपयोगिता या वांछनीयता से लगाया जाता है। मनुष्य किसी वस्तु, क्रिया या विचार को अपनाने से पहले यह निर्णय करता है कि वह उसे अपनाए या त्याग दें, ऐसा विचार, भाव व्यक्ति के मन में निर्णयात्मक ढंग से आता है,तो वह pमूल्य कहलाता है। डॉ नगेंद्र का मानना है कि "मूल्य शब्द पदार्थ के आंतरिक गुण का नाम है, जिसके कारण लोक जीवन में उसका महत्व या मान होता है।“1 जोन्स अनुसार-"मूल्य वह प्रेरणा है, जो व्यक्ति के प्रयासों को संतुष्ट करती है, जिससे वह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सके।"2 मूल्यों के माध्यम से अभिप्रेरणा को एक नई दिशा प्रदान होती है ।मूल्य जीवन जीने का एक दृष्टिकोण है, जो हमारे व्यवहार को नियंत्रित एवं निर्देशित करते हैं ।कुछ मूल्य को समाज द्वारा अर्जित किया जाता है ।

हम किसी से स्नेह करेंगे या नहीं, सहयोग अथवा असहयोग करेंगे,किसी का सम्मान या अपमान,यह हमारे विचारों पर निर्भर नहीं करता अपितु यह हमारे अर्जित परिमार्जित मूल्यों द्वारा निश्चित होता है। समाज में व्याप्त समस्त मूल्य हमारे व्यक्तित्व के विकास एवं चरित्र निर्माण की दृष्टि से वांछनीय एवं उपयोगी होते हैं। मूल्य शिक्षा की अवधारणा: मूल्य शिक्षा अपने आप में एक व्यापक एवं विवादग्रस्त धारणा है । विवादग्रस्त इसलिए क्योंकि मूल्य शिक्षा के संबंध में स्वयं मूल्यविदों में एकमत नहीं है । मूल्य शिक्षा से तात्पर्य ऐसी शिक्षा से है, जिसमें विशेष रूप से मूल्यों पर बल दिया जाता है । शिक्षा के समस्त अंग जैसे पाठ्यक्रम,शिक्षण विधियां, उद्देश्य एवं शिक्षक आदि सभी मूल्यों का संवर्धन करने में तत्पर हों। आज सर्वत्र मूल्यों का ही प्रश्न दिखाई दे रहा है। शिक्षा ही एक ऐसा माध्यम है जो मूल्य संबंधी प्रश्नों का उत्तर दे सकती है । अनेक शिक्षाविदों ने इस विषय पर चिंतन मनन करके मूल्यों को पुनः स्थापित करने के लिए भरपूर प्रयास भी किए हैं, और आज भी प्रयासरत हैं । मूल्य आधारित शिक्षा किसी भी समाज और देश के सर्वांगीण विकास का मुख्य आधार होती है, जिसमें हमारे नैतिक,सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक मूल्य समाहित होते हैं । जिसमें विभिन्न विषयों को मूल्य परक बनाकर उस के माध्यम से विभिन्न मूल्यों को छात्रों के व्यक्तितत्व में समाहित करने पर विशेष बल दिया जाता है। जिससे उनका संतुलित और सर्वांगीण विकास हो सके।

मूल्य आधारित शिक्षा के सिद्धांत

मूल्य आधारित शिक्षा के मुख्य सिद्धांत इस प्रकार हैं-

1. मूल्य आधारित शिक्षा धार्मिक शिक्षा से भिन्न होती है इसमें धर्म विशेष पर बल नहीं दिया जाना चाहिए।
2. इसको एक स्वतंत्र विषय के रूप में पाठ्यक्रम में स्थान नहीं दिया जाना चाहिए बल्कि विभिन्न विषयों में इसके लिए मूल्यों को समाहित करना चाहिए।
3. संविधान में निर्देशित मूल्य एवं सामाजिक उत्तरदायित्व मूल्यपरक शिक्षा के केंद्र बिंदु होने चाहिए ।
4. मूल्यपरक शिक्षा को समाज के आर्थिक,सामाजिक व्यवस्था के संदर्भ में क्रियान्वित किया जाना चाहिए।
5. मूल्यपरक शिक्षा का आधार घर, विद्यालय, आदर्श

वातावरण तथा शिक्षा होनी चाहिए।

मूल्य आधारित शिक्षा की आवश्यकता

मूल्य आधारित शिक्षा से तात्पर्य ऐसी शिक्षा से है जिसमें विशेष रूप से मूल्यों पर बल दिया जाता है, इसके अंतर्गत एक ऐसी प्रणाली का संगठन किया जाता है जो शिक्षा के सभी अंग जैसे - पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियां,उद्देश्य एवं शिक्षक आदि सभी मूल्यों का समर्थन करने में तत्पर हों। मूल्य आधारित शिक्षा की आवश्यकता जितनी आज है उतनी शायद पूर्व में न थी क्योंकि आज के समय में अनैतिकता, अमानवीयता और अन्याय प्रवृत्ति अत्यधिक बढ़ती जा रही है, ऐसे समय में मूल्यों को शैक्षिक पाठ्यक्रम में शामिल करने की आवश्यकता भी बढ़ती जा रही है। हमारे जीवन को सुखदायी बनाने में भी मूल्यों की महती आवश्यकता है। आज हमारी युवा पीढ़ी में नम्रता, सच्चाई, ईमानदारी, बड़ों का मान-सम्मान, शिष्टाचार, सेवा की भावना, सहिष्णुता, बलिदान आदि गुणों का अभाव है। मूल्य आधारित शिक्षा इन गुणों के विकास में सहायता प्रदान करेगी।आज भारतीय समाज में लोगों द्वारा जिस प्रकार का आचरण किया जा रहा है, उस से ऐसा प्रतीत होता है मानो नैतिक, सामाजिक मूल्य विलुप्त हो रहे हैं । लोगों में ईर्ष्या,सहयोग की भावना फैली हुई है। मूल्य आधारित शिक्षा बालकों में सहयोग एवं सहानुभूति की भावना को विकसित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देती है ।आज के परिवर्तनशील युग में मूल्य आधारित शिक्षा का मुख्य बिंदु यह नहीं कि मूल्य की एक लंबी सूची बना ली जाए और उसे बिना समझे स्वीकार कर लिया जाए, अपितु मूल्यों का मूल्यांकन विशेष रूप से व्यक्तिगत, सामाजिक एवं ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में किया जाना चाहिए। वर्तमान में हमारी युवा पीढ़ी, समस्त जनमानस वैज्ञानिक, फैशन परस्त,

भौतिकवादी अस्तित्व वादी विचारों के प्रभाव मे आकर हमारे भारतीय आदर्शों, मूल्य तथा मान्यताओं को भुलाकर पाश्चात्य जीवन शैली को आत्मसात करने में लगा हुआ है। हमारे भारतीय शाश्वत,सनातन मूल्य कमजोर पड़ते जा रहे हैं। ऐसी स्थिति में इस बात की आवश्यकता अनुभव की जा रही है कि मूल्य आधारित शिक्षा का ऐसा स्वरूप तैयार किया जाए, जिसके द्वारा समाज का प्रत्येक व्यक्ति मूल्यवादी मान्यताओं से संपृक्त होकर प्राचीन भारतीय शाश्वत मूल्यों का आधुनिकता के साथ समन्वय करते हुए आगे बढ़ सके । आज दिन प्रतिदिन मूल्यों का ह्रास होते दिखाई दे रहा है, जो एक चिंता का विषय है। हमारा समाज मूल्यहीन दिखाई पड़ रहा है । "राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2000 में भी विद्यालय शिक्षा के सभी स्तरों पर मूल्य के विकास की बात कही गई है।"3 आज शिक्षा का उद्देश्य मात्र सूचना प्राप्त करना, परीक्षा पास करना और डिग्री हासिल करना रह गया है। अतः व्यक्ति के सर्वांगीण विकास एवं विभिन्न मूल्यों का ज्ञान प्रदान करने हेतु मूल्य शिक्षा की नितांत आवश्यकता है। वर्तमान में प्रचलित पाठ्यक्रम अनेकों तकनीकी आंकड़ों से भरा हुआ है,जिसमें तथ्य,आंकड़े, नियम,कानून आदि तो दिए गए होते हैं परंतु युवाओं को जीवन की सूक्ष्म बातों में भाग लेने की कोई गुंजाइश नहीं होती। उनमें कुछ सीखने की क्षमता तो है लेकिन पाठ्यक्रमों में शैक्षिक विषयों पर अधिक बल दिए जाने के कारण अलग से कुछ सीख नहीं पाते हैं। इसलिए युवाओं के सर्वांगीण विकास हेतु मूल्य आधारित शिक्षा की आवश्यकता है । हमारी वर्तमान शिक्षा पद्धति और मूल्य में कोई समन्वय देखने को नहीं मिलता। आज भाषण,बने बनाए नोट्स, उत्तर को दोहराने का कौशल ही विद्यार्थियों के परीक्षा का मापदंड बन चुका है। ऐसे में विद्यार्थी ना तो अपने अस्तित्व को पहचान पाता है और ना पुस्तकीय ज्ञान उसकी मदद करता है । आज गिरते हुए मूल्य हमारी शिक्षा के लिए चुनौती है । ऐसे में प्रश्न उत्पन्न होता है कि मूल्यों के विकास के लिए पाठ्यक्रम का निर्माण कौन करे?, उनका क्रियान्वयन कौन करें ? यह अध्यापकों के द्वारा किए जा सकते हैं । परंतु इसके लिए सर्वप्रथम अध्यापकों में भी वांछित मूल्यों की स्थापना होनी आवश्यक है तभी वे अपने विद्यार्थियों में मूल्यों का विकास कर उन्हें मूल्य संबंधी

जानकारी प्रदान कर सकेंगे । आज भारत के युवा वर्ग को ऐसी मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता है जो उनमें सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों के प्रति उन्हें प्रेरित कर सके ।हमारे शिक्षक यदि मूल्यों से युक्त होंगे,तभी वे अपने विद्यार्थियों में मूल्यों का प्रस्फुटन कर सकेंगे। सन् 1950 में जब भारतीय संविधान का गणतंत्र रूप हमारे सामने आया था तो उसमें विशेष रूप से मूल्यों की चर्चा की गई है। 1948-49 में डॉक्टर राधाकृष्णन की अध्यक्षता में जिस शिक्षा आयोग का गठन किया गया उसके अंतर्गत सभी शिक्षण संस्थानों में दो मिनट मौन रहने के बाद प्रार्थना सभाओं का आयोजन, स्नातक स्तर पर छात्र-छात्राओं को भारतीय साहित्य,धर्म व दर्शन का ज्ञान प्रदान करवाने की अनुशंसा प्रदान की गई है। 1964 -66 में डॉ० डी.एस. कोठारी की अध्यक्षता में एक कमीशन का गठन किया गया जिसमें छात्रों में शिक्षा द्वारा सामाजिक वातावरण की भावना का विकास, नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों के प्रति निष्ठा, विशिष्ट साहित्य के अध्ययन की भावना का विकास,विभिन्न धर्मों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन के संदर्भ में अनुशंसा प्रदान की गई । राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में भी इस बात पर गहरी चिंता प्रकट की गई है कि "जीवन के लिए आवश्यक मूल्यों का ह्रास हो रहा है और मूल्यों पर से लोगों का विश्वास उठता जा रहा है । शिक्षा क्रम में ऐसे परिवर्तन की जरूरत है जिससे सामाजिक और नैतिक मूल्यों के विकास में शिक्षा सशक्त साधन बन सके।"4 इस प्रकार वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मूल्य के विकास के संदर्भ में एक रणनीति बनाई जाए जिससे हमारी समाज को एक नई दिशा एवं आदर्शता प्रदान हो सके। मूल्य आज के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भी जीवंत एवं उपादेय हैं, आवश्यकता है, उस पर स्वाध्याय, चिंतन एवं मनन करने की। इसके लिए विद्यालय, विश्वविद्यालय स्तर पर ऐसे पाठ्यक्रम, शिक्षण अधिगम परिस्थितियों को लागू करना होगा, जो अधिक से अधिक मूल्यों के विकास में सहायक हो सकें। अतएव विद्यार्थियों के समग्र विकास हेतु, विभिन्न मूल्यों के ज्ञान हेतु मूल्य आधारित शिक्षा की आवश्यकता है।

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र के मुख्य उद्देश्य हैं।-

1. छात्रों में सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों का विकास करना।
2. अध्यापकों में आवश्यक मूल्यों का विकास करना।
3. मूल्यपरक शिक्षा की अपेक्षाओं को जानना ।
4. लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास करना।
5. राष्ट्र एवं समाज के विकास में मूल्यों का विकास करना।
6. मानव के सुखद भविष्य का निर्माण करना।

निष्कर्ष

उपरोक्त विवेचन के आधार पर यह निष्करष निकलता है कि मूल्य अवधारणा, अर्थ एवं सिद्धांत अध्यापकों एवं विद्यार्थी द्वारा मूल्यों को समझने में सार्थक हैं।

एक विद्यार्थी में अपेक्षित गुणों का विकास हो, इस प्रकार की सोच सभी अध्यापक रखते हैं परंतु विद्यार्थियों के साथ-साथ एक अध्यापक मे भी वह मूल्य परिलक्षित हो, समाज इसकी आशा समस्त अध्यापकों से करता है।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि समय-समय पर विभिन्न शिक्षा समितियों, शिक्षा आयोगों, समाज शास्त्रियों और शिक्षाविदों द्वारा मूल्य संबंधित सुझाव और सिफारिशें प्रस्तुत की गई है उनमें मुख्यता मूल्य, समाज, व्यक्ति का सुखद जीवन एवं व्यवहार की आवश्यकता, लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास, विद्यार्थियों में नैतिक विचारों का विकास, मूल्यों की मानव

समाज में उपयोगिता, भौतिक एवं अध्यात्मवादी संस्कृति में समाजवादी विचारधारा पर विशेष बल दिया गया है।

मूल्य आधारित शिक्षा के संदर्भ में भविष्यगामी सुझाव

वर्तमान की यदि बात करें तो आधुनिकीकरण, सामाजिक परिवर्तन, अभिभावकों की मूल्यों के प्रति उदासीनता व दूषित शिक्षा प्रणाली मूल्यों के ह्रास का मुख्य कारण हैं।"आज मूल्यो से लोगों का विश्वास उठ रहा है। इसलिए शिक्षा पाठ्यक्रम में ऐसे परिवर्तन की आवश्यकता है जिससे सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों के विकास में शिक्षा एक साधन बन सके।"5 हमारा समाज सांस्कृतिक रूप से बहु आयामी है, इसलिए शिक्षा द्वारा सार्वजनिक और शाश्वत मूल्यों का विकास होना चाहिए जो हमारे लोगों को एकता की ओर ले जा सके । आज शिक्षक एवं अभिभावक बालकों की मूल्य संबंधित शिक्षा के प्रति उदासीन है । शिक्षा नीति निर्धारक एवं प्रशासक भी इनकी तरफ अधिक ध्यान नहीं देते । प्रसिद्ध समाजबेता एम० एन० श्रीनिवास ने अपने लेख ' चेंजिंग वैल्यूज इन इंडिया टुडे' में लिखा है कि "आज भारत में उपभोक्तावाद की प्रवृत्ति अधिक बढ़ गई है जो प्रचार माध्यमों, दूरदर्शन सिनेमा, इंटरनेट, पत्र- पत्रिकाओं पर आधारित है । यह युवाओं में व्याप्त मूल्यों को बिगाड़ रहा है।"6 आज गिरते हुए मूल्यों का प्रभाव शैक्षिक परिवेश पर पड़ रहा है। अतः शैक्षिक संस्थाओं का यह दायित्व है कि वे इन परिस्थितियों में अपने बुद्धिमता पूरण प्रयासों के द्वारा इनसे निपटने की चेष्टा करें। शैक्षिक संस्थानों को भी मूल्यपरक शिक्षा के प्रावधान में अपनी अहम भूमिका निभानी चाहिए। मूल्यों के विकास के लिए शिक्षक का आचरण, उसका व्यक्तित्व ऐसा होना चाहिए कि वह विद्यार्थियों के लिए अनुकरणीय बन जाए ।वह जिन मूल्यों की अपेक्षा अपने विद्यार्थियों से करना चाहता है वह मूल्य स्वयं उसके व्यक्तित्व में होने चाहिए । विद्यार्थी शिक्षक को अपना आदर्श मानता है, वह अपने शिक्षक में निहित मूल्यों का अनुकरण करता है। विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास शिक्षक पर निर्भर करता है अतः मूल्यों के विकास में शिक्षक को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए । किसी भी संस्था एवं विद्यालयों में नैतिक, सामाजिक, आध्यात्मिक मूल्यों पर आधारित शिक्षा दी जानी चाहिए। पाठ्यक्रम का निर्माण ऐसा होना चाहिए कि छात्रों में सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों को आत्मसात करने की प्रेरणा मिल सके। शिक्षा को मात्र सिद्धांत क्षेत्र तक सीमित न रखकर इसे समाजिक जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। कोठारी आयोग (1964-1966) में यह कहा गया है कि "पाठ्य चर्चा में एक गंभीर त्रुटि यह है कि इसमें सामाजिक,नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा की व्यवस्था नहीं की गई है । हमारी सिफारिश है कि जहां कहीं संभव हो, बड़े-बड़े धर्मों के नीति संबंधी उदेद्यशों की सहायता से सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा देने का जागरूक और संगठित प्रयत्न किया जाना चाहिए क्योंकि जीवन मूल्य एक प्रकार के स्थायी विश्वास होते हैं। आरंभ में एक बार जिन मूल्यों का बीज छात्रों में वो दिया जाता है, बाद में उन्हें परिवर्तन करना कठिन हो जाता है।"7 शिक्षा एक गतिशील प्रक्रिया है यह समय स्थान, आवश्यकताओं के अनुसार परिवर्तित होती रहती है । यदि शिक्षा गतिशील ना होगी तो समाज विकास के पथ पर अग्रसर नहीं होगा। मूल्यों के विकास के लिए प्रशिक्षण संस्थाओं के पाठ्यक्रमों में मूल्य शिक्षण को अनिवार्य किया जाना चाहिए। एक शिक्षक जो भावी पीढ़ी का निर्माता होता है उसमें विभिन्न प्रकार के जीवन मूल्यों का समावेश होना समाज के हित के लिए अत्यंत आवश्यक है । इस बात

की भी आवश्यकता है कि शिक्षा प्रशिक्षण संस्थानों में जहां शिक्षक बनाए जाते हैं वहां विशेष प्रकार का मूल्य संबंधी प्रशिक्षण शिक्षकों को दिया जाना चाहिए। शिक्षक प्रशिक्षकों को इस बात का प्रयास करना चाहिए कि प्रशिक्षणार्थियों में अधिक से अधिक मूल्य विकसित हो सके ताकि जब वह प्रशिक्षणार्थी शिक्षक बनकर समाज की सेवा करें तब एक स्वस्थ समाज के निर्माण में अपना योगदान दे सकें। इसके अतिरिक्त मूल्य आधारित समस्त पाठ्यक्रम राष्ट्रीय ढांचे पर आधारित हों तथा प्राथमिक, माध्यमिक तथा विश्वविद्यालय स्तर पर मूल्यशिक्षा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में भारतीय संस्कृति, आदर्शों एवं परंपराओं का ज्ञान करना होना चाहिए। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिसके द्वारा विद्यार्थी सत्य के आधार पर अहिंसा का मार्ग अपनाते हुए प्रेम पूर्वक जीवन यापन करना सीखे, उनमें मानवता का प्रसार हो एवं शिक्षार्थी की शारीरिक, मानसिक उन्नति हो।

संदर्भ

1. डॉ० नगेंद्र: मानविकी पारिभाषिक कोश (साहित्य खंड) पृ०-266
2. डॉ० हुकुमचंद राजपाल (समकालीन कविता में मानव मूल्य)पृ०-26
3. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, सारांश (2000), नई दिल्ली, एन. सी. आर. टी. पृ०-2
4. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986): 'मानव संसाधन विकास मंत्रालय,भारत सरकार (शिक्षा विभाग) नई दिल्ली, पृ०19
5. मूल्य विमर्श पत्रिका, मालवीय मूल्य अनुशीलन केंद्र, हिंदू विश्वविद्यालय, काशी पृ०16
6. एम.एन.श्रीनिवास का लेख, 'चेंजिंग वैल्यूज इन इंडिया टुडे'
7. पांडेय आर, (2000) "मूल्य शिक्षा के परिपेक्ष्य" आर. लाल. बुक डिपो मेरठ, पृ० 153
8. डॉ० शुद्धात्मक प्रकाश जैन: रेखा प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड आगरा।
9. अंतर्मुखी-बहिर्मुखी परीक्षण फाइल, पीडीएफ लिंक बी. एड. प्रथम वर्ष
10. मूल्य शिक्षा, भारतीय शिक्षण मंडल, नागपुर
11. नायक, गोपाल प्रसाद (2009), मूल्यों के विकास में शिक्षण संस्थानों की भूमिका, परिपेक्ष्य-16,अंक-3 दिसंबर 2019